

ॐ नमो लोकायुक्ताय ॥ गार्थिदं द्वां लोकनाथ ॥ ॐ कारुण्यामृतं दीप्यते ॥
 इत्युक्त्या क ॥ श्री ॥ श्री ॥ वलाकिश्वर ॥ समस्त लोकयात्राथ ॥ नमस्तुते ॥
 याय गन्तव्यं ॥ मुत्वा ॥ गन्तव्यं ॥ मरुत्यं कन ॥ सर्वसत्त्वा ॥ सर्वसत्त्वा ॥ सर्वसत्त्वा ॥
 वृद्धवृद्धन ॥ सर्वसत्त्वा ॥ नमस्तुते ॥ मुत्वा ॥ गन्तव्यं ॥ मरुत्यं कन ॥ सर्वसत्त्वा ॥
 वित्तस्य नाना ॥ ॐ ॥ लयाव ॥ अयनिस्त्यन ॥ ॐ ॥ नमस्तुते ॥
 नमस्तुते ॥ समस्त लोकयात्राथ ॥ द्वां लोकनाथ ॥ ॐ ॥

वसुदेव भज्याय नमः श्री महाविद्या

II-42

भाउ गकलानसभाहशस्यैवावचन्द्रमाथे, खालचुनयालस, यकपय
थिमिरवा, थथिदलाकनाथ॥ सर्वज्ञ समस्तसर्वज्ञानयामकर्तृभानम
लिङ्गस्यैविकाक, स्वर्गवनयनाला, थथिदलाकनाथ॥ थथि यद्ययातिः
लाकेश्वर, समस्तयागीवरविस्यैविकाक, ग्यानगुनयवर्गप्रमाननथ
न, थथिदलाकनाथ, नमस्कार॥ १ ॥ उदुङ्गनासवनपीनकपालव
कालकाधनहिमगुस्वानमिवागुदने, वृक्षाश्वनं प्रतिधनमधुन

चवाकं, तं यद्ययातिमृदुवर्णश्वनन्माम॥ ॥ गाथदलाकेश्वरः
भानसाक्षासकयव, रूद्रगवाधसंहिद, दानानरुद्रनदाद, खानहिद
कुरुनिद्राद, चायाथिनायववा, नत्त, (थं तजदव॥ वृक्षासमूर्तिवः
दग्धमधुधननयू, प्रतिकामलवचन, मध्यात्रसथिवाक्यचनदु
नगुययाय, थथिदनाकेश्वर॥ थथिदयद्ययाति, कामनचन्द्र, (थं का
मनवर्ध, थथि लाकेश्वर, नमस्कार॥ २ ॥ मालाधनं, कनकन, त्र

विह्विताङ्गं न प्रयुज्यं उठ विह्विताङ्गं न प्रयुज्यं कृष्णं जिनास्त्रं धनं
यस्त्वर्ध्वं वर्ध्वं तं यद्यप्यानि सुदृग्मन्त्रधनं न मामि ॥ ॥ नन्वसन्त्रः
न कवचकं तथा यदार्थं सदा हि दमा लानका खास्यं विष्ठाकं
नन्वयदार्थं न थय थय सत्त्वधनया स विष्ठाक ॥ मित्रोश्च ग्व उ धन
न प्रयुज्यं सद् नियाया धन्य मा तसं विष्ठाक का वसाङ्ग गुलन वसुन
मिथ्यं विष्ठाक न कस्याक या दधि त्रया वर्ध्वं थथि वधमति लाक श्वनः

यात्रय ॥ थथिं दयद्यप्यानि लाक श्वन कामन धान सा रून्ध्या गमन्त्रं
हिं द थथिं द द्वा लाक श्वन नमस्का ल ॥ ३ ॥ त्वं लाक नाथ सवला कि
तनाम धर्यं यं रूप विनं व क ल सय्य नाज ॥ चिन्ता मणि पवन कल
ल ग्ग त ग लं तं यद्यप्यानि सुनि सर्व कृतं न मामि ॥ ॥ पुनया न स ला
क नाथ धर्कं नाम धाय प्रवला कि त श्वन धर्कं धाय पुनया न जाना ऊन
सखना ग व क ल न रु स विष्ठाक चिन्ता मणि धया र ग्गु नी य दार्थं लन

दव, थथि, मलि कुन न सस्य विद्या क द्वा स स लया ल यद्य या लित
धर्क ना स, स म स स्य न म, तिया स्य ग व, ला के ना थ न म स्का ल ॥ ५ ॥
त्वं ज न ना नि व ल ता धित सर्व सत्वा संसा न य द्वा नि मि ना लू व म न
सत्वा ॥ आ ना कि त, य थ म न् ल व वा धि मा र्ग जै य द्वा या मि व न ध र्म द
द न मा मि ॥ ॥ कु न या न स, न गु न दा य मा न न थ न व न गु न न, पु ता धि त
श स्य विद्या क, स म स, ना क या त, व न वि व, थ स सा न, स म्दु ति न स, यै त्व स, तु

संवा द, स न्द य नी थं क स्य विद्या क, स न स, आ न द या व क व, स त्व ज न य नी,
आ ना द्वा द य क व द्वा, कु न या ल, द्वा यी ध न्द न्द न या न, वा धि स त्व ज, पु न न
नि स्ता मा र्ग जै श स्य विद्या क ॥ कु न या न, य द्वा ज्ञा स्य विद्या क, व न वि द्वा
स्य, ला स द्वा य के, म थ न न्द र्ग क्क के, थ थि ला के ना थ न म स्का न ॥ ६ ॥
॥ ७ ॥ ग ली क्क ज न न न क द्वा वि धि म ग्नी, नि ति क्क र्ग द्वा दि वि सा न
रु द्द स य द्वा, य ना न की स क न द्वा ४ त्व वि ना स य नी, तै य द्वा या नि न

वि

नकाभिसर्मन्नमामि॥ ॥ धनननिजमलाकसकरनामयविद्या
दावयापियनीध्रुवित्रोत्रोमहामाहाननकसधादयनि॥ थाका
संननकभावकावविद्याकयापियनीकरनावास्यं ददयदु
ष्टिनस्वस्यमहालितनयास्यं नानवास्यं दंसयत्रषयासं महादु
ष्टवनासयाकैथार्थिदकरनामय॥ ध्रुम्वजधननयननकया
अग्नि लोकनाथनमस्कात्र॥ ३॥ सक्तास्यनिर्यमपालकरुणकरु

मिहधर्मजाजमिवमगगतकामनूयि॥ थकमरुमिमिवर्थमि
नतानिमिम्नं तयध्रयासिदुतसासगतं नमामि॥ ॥ लाकनाथ
नननकभावकवरवदावजससासनायाकयनि॥ यापिद्वययाव
धादयनिसनधर्मनाजाखादावमहाज्ञासचायावविवशगत
धयाशुनित्रयधर्ककनयानधर्कदयध्रयासि॥ ननकरुतकाव
सखावति सुयद्वयधर्थाकनाथगर्विपाननमस्कात्र॥ ॥ ॥

[illegible]

चक्रवर्धनं धिक्कल्लोकात्तथा नमस्कृतम् ॥८॥ त्वं युतलोका गतयः कुरु
वसानं गुरुविम्वरं उदययवतः जीर्णमग्नौ कुरु कुरु ॥ ८ ॥ खतययीदि
तसर्वसत्त्वात्तयद्रयागिरुखनागुरुकलन्तमामि ॥ ९ ॥ लयात्तथा
लोकात्तथा यत्तथा कुरुत्तथा सविष्ठाकः सूर्यावावदध्वा दध्वा
ययवतः गवदध्वा दध्वा सविम्वरयुतया जिर्णया दध्वा दध्वा
यत्तथा कः यत्तथा सवावदध्वा ॥ ८ ॥ खतययीजनकवत्तथा नार्कलक्ष्याकः

थर्थिवतकादकवयद्यधननय्नाकनाथप्यासचावनासयाकथर्थि
दस्वामिनमस्काव॥ ६ ॥ अथान्यतद्वद्वदीष्टितयुगसत्त्वात्
पीयनकननदृष्टवगनदितीयर्थिसन्निवहनद्वद्वदीष्टितयुगसत्त्वात्
नौतयद्ययाविद्वद्वदीष्टितयुगसत्त्वात् ॥ सकनदयुगसत्त्वात्
कयनिसाप्रलम्भधननयप्याकप्यासचावयोजनकयावर्षादस्व
दावकनृषाचायावथथनकावलाकधनयात्रादानसधादनदि

वद्वद्वदीष्टितयुगसत्त्वात् सकनदयुगसत्त्वात्
विष्णुकनृषाचायावथथनकावलाकधनयात्रादानसधादनदि
कप्यासचावथर्थिधर्मसन्निवहनमस्काव॥ १० ॥ गत्वात्तमेतद्वद्वदीष्टितयुगसत्त्वात्
वर्जितचन्द्रसूर्याचिन्तामणिद्वालितनक्षत्रप्रतापतामसयद्वद्वदीष्टितयुगसत्त्वात्
कसगाधधननमस्कात्तयद्ययाविद्वद्वदीष्टितयुगसत्त्वात् ॥ ११ ॥
॥ चन्द्रसूर्याचिन्तामणिद्वालितनक्षत्रप्रतापतामसयद्वद्वदीष्टितयुगसत्त्वात्

यावद्दुर्न (थ) (थ) दायाव सायुयाव साद (उ) दनाकण पुतयिभव थथिः
यायिष्टं नाकमहाविद्धायसुते साक नाथ विद्यादाव चिन्तामनिः
कृष्णयातक चन्द्रातिष्ठानका (थ) आङ्ग नमानयाक (थ) अङ्ग
दनाकणगनन तगवानयावननसदद पुनामयादाव पु लुलिः
कडादावविद्याक स्वामिथाय पायमावकवर्द्धनमस्काव ॥ ११ ॥
गत्वावयनवलित्गनमनात्रथस्य यदीयग हलमनरुनयिषुयागंध

मीक (थ) नयनिर्गयितदानवर्द्धतं यद्वायालिवत्रधर्मददंनमामि ॥ ॥
वलिनाजावावननयातात्रसद्धकर्द्धनकवसायाव कननामयविद्यादाव व
लिनाजायताभर्नतुनवनविनाशाक श्वनद्धयायिषुयागुदानविद्यायाय
न्यनंधवलिनाजामहाधर्मिष्ठ धर्मयाक पुनानकथासुतय यविज्ञनय
ताधयाधयाविवदानविववदसायुद्धद रुयद्वायालिलाक श्वनवनधर्म
सदाहसथासथाविवर्द्धनमस्काव ॥ १२ ॥ गत्वावयनदिविकुलदवः

यथा दानस्यादि न दुःखयि जितदुःखि तीव्रतां यावया किंप्रिय पूर्वसर्वद्विज
नैः तं यद्यथा लिखनवृद्धि कर्तुं न मामि ॥ ॥ स्वर्गविद्यादावदिविक्रुल
धया नगनसुदवयुगुयनिस्यन दानया दामदयावया कया सचा
वनागनकवमहादूःखनधादयनि कर्तुनावायावथयनिस्यायात्र
या कया सचावनागमावकवकुक्कुधनाठाडावमुपूर्ययादावविव
नत्रभ्रतवाञ्छा किमवृत्ताविहविंलाथयि यद्यथा लिखा कृष्णधन

अदिकविवर्द्धनमस्तु ॥ १३ ॥ तं कामत्रयमूयदसितं नाकसिति
कामावस्यनवनिर्गतवनाकसिदिद्यात एव सिक्तयविवर्द्धितधर्मविर्क
तं यद्यथा लिखनवृद्धि कर्तुं न मामि ॥ ॥ कुत्रयानसिंहनद्विषसवनिया
अदिकरूढावविद्यादावलकायाकनकलिनियनिसनदासनवनिया
यनिनकलिनियनिसन कामनभादायादावथथैरुक्ताकृष्णपुष्पिधक
मृदिकनयावकुलनावायवथवानियायनिलहायावनयवनवगमूय

नूयकायावलोकाश्चवनथवस्त्रागमयावसमूहयालयाचकावल्लकायाक
थर्थियग्रधनयूगूनकनूयकृष्णविष्ठाककर्मनमस्तुल॥१४॥ **विष्णु**
उरुमिहमिकाटिसमूहवनिगत्वावथनधलिरूपमनस्मलनिनि
स्थालितैद्यूनद्यूनायददंनिधर्मज्ञयद्यपालिजनिरूपधर्मनमा
मि॥०॥ ननकन, छापनशर्षाद, कयर्थगमन, वा, त्विननकस, कि
मिर्तुकाटिप्रमाननवाढ, थास, तमनत्रययादाव, दयावन, विष्ठादाव, ३

धननकस, वाढ, तानकी, दका, थाकास्य, धकिनयटंगियनि, यूनननहाना
व, धरुमनत्रयन, विष्ठाककर्म, धर्मरूपवर्षदावर्षदप्रनामयाता, प्रुनिका,
हस्ता, प्रुत, धमृतयादय, धर्क, नमस्तुल॥१५॥ **इति कर्मागर्जदविष्णाल**
रुवषयुर्वि, कृष्टकृष्टयहययीठितसर्वसत्वा, धायादिवृष्टिवरुवृ
दिसमृद्धिनर्त, तंयद्यपालिवनकारुनिकैत्रमाति॥
इयीत्रिमनदंवामगादाव, महादृष्टि, कृष्टयाव, महातयन, याक्षिदक, यत्था

क. या सचाव नयमदू नं, यी जान कर्ष, वा दर्वदाव, श्रीमन नै, क नृ धा वा याव, त
लंख, वा, वा, जाक कुगुल, स्वात, माण, कुल, हूति, पुमाण, सुक, हूल, मू न, त
षा उ म, समिधि, नत्तादि, समर्प, विस्ति यार्न, धार्थिद, विविचिना नायमं स
मर्ष, यर्ष, यादाव, वन, विव, यल, सान, आर्ष, विष्ठाक, कर्ष, नमस्का ल ॥ १७ ॥
वा नाह, अथ कत नृयमहा उ वन, उर्मु, गऊ नवलित, अमृय नाद, गीहि, आर्ष
नर्त यवन व गमहा समुद्र, तं यद्वा या धिजित म, एतृय नमामि ॥ ७ ॥

सिंह व द्वीय स, न कलानियनिसर्न, वनिजा नहा, अदि क, नवर्वदाव, आर्ष, अ
नस्य नद या वा याव, रु, थं, सना, थं, उत, थं, कीणी, थं, धार्थि मला, उग्र नृय कः
याव, थव निजा नयनि, थव सचि, स, गय काव, तत्का नर्न, समुद्र या न याव का
व, ल का या क, रु सन यव, थं, म, एतृय भाव कव, धार्थि, क म ना, रु रु, नाथ,
स्वामि, म, एतृय, रुत क, विष्ठा कर्ष, यरु नमस्का ल ॥ १८ ॥ तेषां रु के न व
समनामि विमृ, लिदु, र्व, नाना समा धिय नि य, र्व, विचि त्र मर्ग, तीना

सकृपनिवस्यन्ति पुनर्गसत्त्वार्जयद्रयाणि द्वयनासकर्वन्नमामि
 ॥७॥ त्रिधातुन, धर्मसानदयकव, रुर्न, सफधातु, त्रिधातुन, उत्पतिशिव,
 दशव, लाकृध्वन, सुर्मनायादान, मातं, पुनर्गसमाधि, पुनर्षदका, सिव
 नकं, नसतायक, मग्नयाक, मदायनयका नस, समस्त, सत्वदका, लाक
 नाथया, विमिताया, या नस, दकास्य विष्णुक, थथिद, ते लाकृ, नाथ, यंकउ
 आसं विष्णुक, सुस्त, रुकव नस, थव सनि नस, दकास्य वाद, धर्म नमस्कान ॥ ॥
 मे

॥७८॥ नानाहयानितवनाममन्त्रस्मवनि, नाऊग्यदं धुरय नाद सवो
 नहुते, नद्यापिमार्जहतकं नुनिवाग्निदग्धं, तयद्रयाणि पुंयचददं
 नमामि ॥ ॥ पुनर्क, नानाहय, ते लाकृ, नाथया, नाम, सुर्म, यादान, मा
 वकव, थथिनाम, नाऊयदं दहय, नाऊ, सयाहय, खूयाहय, तूगयाहय
 स्वायाहय, लांयाहय, साहक, क्वाहय, सीयाहय, रुगक, विष्णुक, लाक
 नाथ, यद्वा आसं, विष्णुवाव, वनविव, मर्थां शयभाचकव, धर्म, नाथ, नम

काल॥ १९ ॥ आद्यीर्यखगयिभा वसदाकिनीनां आयनिवाधितयक
कृदियागद४खर्वेनागकृभवदुआयदनागयनि, गीयद्रयासिरयनास
केलेनमासि॥ ॥ ध्यातय, वायाव, रुव, प्राकाभगचललय, संगचदकाया
रय, पिभचया, रुय, जकिनीया, रुय, आयदायां, रुय, नागया, रुय, वृष्टया
रय, मी, प्रगुवा, वियागद४ख, भाचकव, रुने, विनायाक, वेनारू, याव, दुः
ख, प्रनग, आयदा, नागयाक, थधिद, द्नी, नाथ, स्वामिन, वाम, रुसन, म्वज

धनयय, रुयनासयाक, द्नी, प्रगुनमकाल॥ २० ॥ शुक्राष्टमिनियमधर्म
प्रमाद्ययाग, प्रमेठ, गीयिजितमिदियवद्वचय, सर्वप्रभम्यजिनम्ययप्रस्य
वपाय, गीयद्रयासिवनदायसर्दानमासि॥ ७ ॥ शुक्रयकया, प्रष्ट, ती, वृद्ध, रम
लानमन, धर्म, का, ना, प्रमाद्ययाग, लाकृ, धनयाक, दगयिदि, निग्रहयाकाव
यद्व, मन्त्रधन, वद्व, चर्क, नयाग, समरु, याय, प्रनगयाय, रूठकाव, सूखाव
लि, कृक, द्नी, थधिद, याय, सार्मथ, दव, क, मालाधन, वनविवद्व, पुनाम॥

॥ २१ ॥ निरुणं वसु नमुनसं मृधियानवधु नानादूर्तति नकचम्यकया
 निजाते ॥ नम्यादितगदिउसायदस्यवितानि, तंयद्रयाहिनिययवस
 दान्नमामि ॥ ७ ॥ निरुणं यद्रयाहिलोकस्यनयाकतकयाकक्ययना,
 उक्तमुनसमृद्धिवाधनययकावविनाहर्नयातनयवर्ततस, वासकयूवगवि
 द, यवर्तत, धानसा, अलग्नान, सिमासससव, शीखरु, पालिजात, चायत्तान,
 यित्यदिदव, स्वर्गर्थ, धर्षिथायस, वासकयूव, यवर्तन, नाथधर्क, सिवा

हिंसादीया विष्णु रयं दार्यं नासयायुव कत्रणमयया युतावर्नदव
 लोकदकां सक्तु इजला शक्तिथानं नवधाद धर्कदवलाकन अक्षाः
 यायमजिउधर्क आस्त्रादना ॥ २५ ॥ **वृत्तिशीर्मदायावलाकिर्गधनतः**
दातिकसी शीवन्धुदरु आचार्यस्ते न कत्रनास्तुवसमार्य ॥ ॥
 धनं आयावलाकिर्गधनयानं सुति शीवन्धुदरु आचार्यन धकत्र
 नास्तुव विदइला ॥ **गुह ॥ ॥ सप्तम २१ वैश्वदि १० दीना ॥**

नामनामथिका

हृन् नमो सानवाये ॥ यादु (बुद्ध) खानदानधवला यागुठवला
विना याविनावलदन्तमन्दिनकना या (धनयद्रासना यावका
इनगं कत्रयुतिमिरे दवेणदावनिना सामायातु सनखनि रग
वनीनि (ध्वज्जाडा) युला ॥ ॥ कत्रयानसर्वर्गगधिदधानसा
हायुस्तान (थं चंदुमा (थं द्वाय (थं काण (थं निर्मनननायव सुन
यानस समिल रुनं नायवमु निर्म विद्याक रुनं विनावायुथ

संविद्याक वनविर्वंददधाननायाक, धाउठाकनान, संदुर्ध्वकसंवि
द्याक, हन, नायवयद, धागनयासंविद्याक, धार्थिदकसंनखनी,
समस्तसंन, नमस्कात्रयासंगव, गार्थिश्चननमस्कात्रयाक, वागी
ध्वनी, बुद्धान, विष्णु, महादेवन, सुमथादिन, ब्रह्मादिन, वन्दि
नयादावगव, हात्रथीन, अलकायाव, हतगवनी, कुकायागा, डा
सिद्धिदयकविद्या, सयकनयानी ॥ ७ ॥ ॥ ॥

१०० नमो ॥ लोकनाथाय ॥ ॐ कासयासर्किशसंविद्याक, तुलोक
यानाथयमान, नमस्कात्रयाय ॥ दासिदुर्ध्वमस्तु, संसात्रयाः
महादेवि, यमिज्ञानसमया, गुहिसादनगथागर्ग ॥ ॥ ॥
हलोकनाथ, कुसयात्रयसं, अलकायायमास, धसंसात्र, इतिउश
यासमृद्धसगिनस, यंखसत्रायकु, धससात्रहादा, समृद्ध, यिमावात्रक
महया, धार्थिद, गुहिसा, हतगथागम, कुनयासत्यन, अलकायायमास,

॥ ॥ तिमिलौ गमल पविताहं, ज्ञानार्थदः स्ववदिर्ग, वधूवगम
जिताहं, गुहिसाहं गथागम ॥ ॥ हनार्थजं ज्ञा, ज्ञानसहस्रमुद्र
स्विर्गुं गमनसद्वदाव, ज्ञादा, ज्ञानार्थसूत्र, यासायनि, ज्ञानीपनि
संन, समस्तनं ज्ञानगव, धर्षिददः स्व, हनार्थजं सत्कायादनी ॥ २ ॥
मागुयिरुहगिरेव, प्रगुदासासहिजना, वृन्दुजालं मयादृष्टा, २
गुहिसाहं गथागम ॥ ॥ हनार्थजं न, मामववृत्तना, कंहकाय, कः

ज्ञान, सहिजन, धसमस्त, ज्ञानमखादा, वृन्दुजाल, विद्या, ध्यं ग, ध्य
स्वसंनं नोकेयव, ध्यं हनार्थगम, ज्ञानकायाव ॥ ३ ॥ ज्ञानयापतिर्ज
नार्थ, स्वकर्णकर्मसूत्रनं, नृकाकिरायणाहं, गुहिसाहं गथागम
॥ ॥ हनगवान, ज्ञानमका, सहिनकावयाक, महिनकवचुर्नमखा
द, सिंदकर्मयायसं, ज्ञानमयाहन, चयावगता, किर्लियायसं, ज्ञानक
थियमदृया, धर्षिदयापिर्ग, सत्कायाव, पुहु ॥ ४ ॥ जिर्गदृथ्यमहा

यास्तु नवग्रह न सागस्तु प्रथमं नोक्तं नार्थं गुहिमाह न तथा गर्तं
॥ ॥ इहामि जं रुचिं प्रजानं रुचिं सदा न न्यका न त्विदं सदा अधी
नथायसु जं वादा समुद्रासं न नयद न याव वादा (थं) सदा ग्या कायूचा
(थं) दजं (थं) थिं रयजं वजं रुनाथं समुद्रन रुनी रुतिस्वादा जं थ
कासं विद्या रुन ॥ १ ॥ जिह्मो का समान् रुदा सदा सागस्तु संधी लं
द्रनद्या ग्यमया दृष्टा गुहिमाह न तथा गर्तं ॥ ७ ॥ इह नार्थं प्रतिप्रनाः

न नाम सदा वा सागस्तु समुद्रायाय (थं) सागस्तु समुद्रायायिना सवादा
नायिन साय (थं) थिं दृष्टं रुवजं रुदायाव रुतगवान् ॥ ७ ॥ धर्मा धर्मः
न विदुर्न गम्या गम्या निवदिनं प्रविगनो निर्दकार्यं गुहिमाह न तथा
गर्तं ॥ ॥ इहामि धर्मं प्रधर्मं जनमसिया गं म्य प्रगम्यं जनमसिया जं व
न नाम सदा रु सवादा (गानसि) (थं) थिं दृष्टं रुनाथं रुतगवान् रुतकाः
याव ॥ ८ ॥ सातुद्यानं यि नद्यानं वचनं न जं म हर्तं यग्यामिन न जं

धीस्तुगुहिसाहगथागर्त॥७॥ हनार्थजनसामग्यादाववृष्ट्याटकयाः
दाजवचनज्ञससाजसर्थसहाश्रधाननचकसञ्जुक्ताजनसत्वादाश्र
धशयाधयायमाचककनहदयावनजसहायावप्रत्॥८॥ बुद्धना
कसुदनायियनसावनजानिर्तवृष्टिर्तकर्मसुमनगुहिसाहगथा
गर्त॥ ॥ हस्ताकनार्थप्रगुनससाजसमहास्रवयससाकसजनमसिया
धमस्यादाकर्मसिदसिदशससाधियातनचसयनिवनजग्यादाह

रुगवानजसहायाव॥९॥ काग्ययजजथाकाधुमनवायुनाहर्त
वृष्टिसजिविर्तसाधुगुहिसाहगथागर्त॥१०॥ हानार्थगधधाससाजनज
नकासवयायासहायाथजनादसकृष्टियययजनमदनागधकासि
वृहसुनययावयदर्थनिरुसगर्थजग्यादायाहलजसहायावधमा
हामि॥१०॥ अठविकैर्थकधेववद्वद्वनित्रासयायथगमानयध
मिगुहिसाहगथागर्त॥११॥ हपुठजनसर्वमस्वादाप्यासचावअदिः

कसिमादव, सिमानकायकावचानधर्कवादा, आसन्नसकवसिमसिर्
कषुदव, सिद्धहिद्ध, नर्मनकायावचाट, सिर्काथ, वादावजनथियमद्वा
ला, स्वामिर्जलकायाव॥१॥ **अनायनाधक्यिनाह, रुलाका, दुवद्रम, न**
नाजहनु, गदामन, गुहिमाह, नथगमी॥७॥ हनार्थ, नाजानअनकसेन
ननर्क, सिवलाजादाव, अहनवादाव, अनक, रलास्याक, गधधनसा, अयः
नाधमद्रकनान, अन्यकवर्थ, थथियायमाचकन, दयावत॥१२॥७॥

ननकयधमान्द्रा, कचिमानर्कविदर्थ, सनर्नकटगलामि, कामिः
नानाहविद्यति॥७॥ हनार्थ, स्वसन, जगनावन, थथि, ननकस, यदह
पावचादा, असनानलकायाकमद्र, असकायायूव, लमक्रीकयव, रुलामि
नर्कनैथाकासी, लकायाद्रुन॥१३॥ **वेदानैवेद्यनाजहनु, सर्वद्याधिविचि**
हक, लाकनार्थस्यगाना, मेलावसेचत्राचत्र॥७॥ हनार्थ, असकायाव
नथिदच, लयात्रधनसा, समस, नागयावाहन, वेद्ययासिर्नवेद्य, रुगवाः

नृसमस्तु योग्याधिभावकवत्ताकनाथस्ययादनास्वर्गसंभवात्तात्रसं
वत्तावत्तात्रैलाकनाथ॥१५॥ **रुतिनलाधनरुगुयतिममायै॥** ॥
धर्मननकसत्वाद्यनिउद्वात्रयाकवृद्धरुगवाननधर्मनियनधमाव॥१६॥
२३॥ नमासाकनाथाय॥ सर्वसुतासुनर्वीश्वविरुगः कानमनादत्रताविन
तर्कः सादमहावर्कव॥१७॥ वसदकः पीजिनयायदनायनमर्क॥१८॥ वासदिः
वाकसकानिस्वर्कः नतविनिमित्तकः पुस्तकर्कः प्राप्तिगतावित्तसचिन्त

दु॥२॥ सुवकवत्तलनिर्जिगमानः सर्वलिनामक्षिर्द्विवितयादः यानतयवत
दवनिखाद॥३॥ स्वर्जनदीजलधोतकयदः निर्मलनिष्ठतनिक्रियः क
वाधिसदयुनिनाशनवेद्य॥४॥ गार्कगणाद्वययः किमिगतः आत्ममनस
तत्तामिदहदः प्रकृतिधनसाविमनमर्क॥५॥ धर्मनाजसुगतासयदहः
यद्वदलायनलावननमः सत्कमलायनिर्सहिगदव॥६॥ कननयजितः
वानसिगकाः त्वनमितामिनकननरुकाः नदिकपृष्ठवित्तासविमर्क॥७॥

दूपांगुत्रनिनमस्तुल्लेयाय॥धनलिगलासेनमस्तुत्र॥दृग्गोवद्रक
कुमानलिवनायाय॥वद्वार्यावनीलक्षीसुप्रसूनीधनपत्रमष्टवर्णी
नमस्तुत्रयादावयासथियकंनयावयात्रयहृत्तहविष्यवर्तमानया
खंहिदमहिंयालक्ष्मि॥ध्यापाचद्वचकंसायश्न॥११॥॥प्रथमसंकीर्त
लारुसूरुलकार्याकोसिद्धि॥११२॥॥पत्रदणवानसाभनकधनलारुलि॥ध
मद्र॥११३॥॥पुगलारुधनलारुनानावसुलारुसिद्धदव॥॥
॥११४॥॥ग्रीवकृष्णनिवृद्धिवनलारुदयव॥॥

॥१२१॥॥मनननानावसुविनायाकसूरुललारु॥॥
॥१२२॥॥मननविनायाकासूरुलभनकधनलारु॥॥
॥१२३॥॥भनकवनऊयादार्नलारुमद्रकाधदयव॥॥
॥१२४॥॥मनयासर्मगत्रयवकल्यालक्षयव॥॥
॥१३१॥॥मिगुसूरुनधव॥धेनायालादावलारु॥॥
॥१३२॥॥भलिकतवकानसर्मलक्ष्मिधनधन्यलारु॥॥
॥१३३॥॥भसागयसमालक्ष्म्यातसर्नाहिंदमद्रव॥॥

॥ १३५ ॥ महासूरु लवधूवाधवनायालादावलाह ॥
 ॥ १३६ ॥ क सचादावलाहमद्रुपनदेहासवानसालाह ॥
 ॥ १३७ ॥ समसुकार्जयाकासिद्धः सूरुलक्षयव ॥
 ॥ १३८ ॥ प्रगुलाहमुीलाहप्रनवृद्धिवनक्षयव ॥
 ॥ १३९ ॥ समसुकार्जयाकासिद्धः सूरुलक्षनलाह ॥
 ॥ २११ ॥ धनदयकयाताचिनायाकधर्मसूरुलक्ष ॥

॥ २१२ ॥ गुलकधननलसंपरिधलार्थधनधल ॥
 ॥ २१३ ॥ पूर्वयाचिनाकार्जकामनामनकलाह ॥
 ॥ २१४ ॥ धमयादाकार्जहिनयवसूरुलक्षयव ॥
 ॥ २२१ ॥ भतिसूरुलक्षयवधनलाहप्रनलाहदव ॥
 ॥ २२२ ॥ सऊनावाधवमिगुमलावनायालाहदव ॥
 ॥ २२३ ॥ धममहानयाकार्जसिद्धक्षयाववयव ॥

॥ २२४ ॥ भवया कार्त्तु चिन्ता या क. सरुल. लारुदव ॥ ॥
 ॥ २३१ ॥ सरुल. लोचदयक. धर्क. चिन्ता या क. हिद ॥ ॥
 ॥ २३२ ॥ मननया का. कार्त्तु सरुल. शयव. लारुदव ॥ ॥
 ॥ २३३ ॥ तादना. लारुदव. रु. नैद. दयव. तुनि. खव ॥ ॥
 ॥ २३४ ॥ कु. कार्त्तु. या. ना. डा. सिद्ध. शयव. धन. लारुदव ॥ ॥
 ॥ २३५ ॥ मय. पनद. हा. स. द. ४. ख. वे. ना. ग्य. श. यव. श. न ॥ ॥

॥ २३६ ॥ पनद. हा. स. व. न. न. म. य. रु. व. ग. व. का. म. हिं ॥ ॥
 ॥ २३७ ॥ यया. या. ग. स. नां. कार्त्तु. द. य. व. म. य. म. हिं. द ॥ ॥
 ॥ २३८ ॥ कु. कार्त्तु. द. सरुल. शयव. म. ख. म. रु. रु. ख. व ॥ ॥
 ॥ ३११ ॥ तादना. लारुदव. म. य. वान. स. न. लारुदव ॥ ॥
 ॥ ३१२ ॥ मनन. हा. न. या. कार्त्तु. सिद्ध. श. यव. नि. श्व. य ॥ ॥
 ॥ ३१३ ॥ सम. रु. कार्त्तु. द. सिद्ध. श. यव. धन. लारुदव ॥ ॥

॥३१५॥ श्रीयावृद्धिशयव. कोमल. मनव. नशयव ॥
॥३२१॥ नाजायाकेन. ननक. रुयदयव. लारु. मद ॥
॥३२२॥ धर्नि. लक्षिता. लारुदयव. सरु. लदव ॥
॥३२३॥ नाजायारुय. नदीक. चिन्ता. कार्ज. याक. शु. रु ॥
॥३२४॥ मनया. नन. नशव. रुदय. सरु. वदव ॥
॥३३१॥ धम. हिन. कान. पी. निदयव. मख. व. रु. व. रु. व ॥

॥३३२॥ सम. ल. नाना. कार्ज. सिद्ध. शयव. मख. शयव ॥
॥३३३॥ यया. कार्ज. या. न. स. ना. म. हिन. यव. न. रु. रु. रु. व ॥
॥३३४॥ मि. गु. स. ऊ. न. ना. पा. ला. यव. कार्ज. सिद्ध. शयव ॥
॥३३५॥ ला. च. न. या. च. का. कार्ज. ना. स. शयव. म. हि. द ॥
॥३३६॥ न. न. वृ. द्वि. रु. मि. वृ. द्वि. न. क. ऊ. न. ध. न. लारु ॥
॥३३७॥ मन. स. स. द. रु. द. यव. लि. ध. सरु. ल. सिद्ध ॥

हिद
॥ ३११ ॥ यातदावगतवक्त्रा महिदु मद्रु ॥
॥ ३११ ॥ धनद्वानि गुरुदुःखशयवः हिदु मद्रु ॥
॥ ३१२ ॥ मनया कामना सिद्धि शयव धन धन्य लाह ॥
॥ ३१३ ॥ मननरात्रया कार्त्त सिद्धि मद्रु शयव गुरुदुःख ॥
॥ ३१४ ॥ मनया कामना सिद्धि कुरु रात्रयात्रा लाह ॥
॥ ३२१ ॥ धनदयक धर्क विनाया कलाह मद्रु स्वव ॥

॥ ३२२ ॥ मीदयक कायदयक धर्क विनाया क हिदु ॥
॥ ३२३ ॥ गुरुदिक तादता लाह दयावचाद धन लाह ॥
॥ ३२४ ॥ मननरु कुरु रात्रयात्रा दयक धर्क लाह मद्रु स्वव ॥
॥ ३३१ ॥ मनन विना गुरुन कया क गुरुदिक लाह दव ॥
॥ ३३२ ॥ गवक्त्रा महिदु रात्रि गुरुदुःख हिदु मद्रु निश्चय ॥
॥ ३३३ ॥ धन धन्य गुरुन क लाह मद्रु स्व संयति लाह स्व ॥